पद – परिचय

प्रस्तुतकर्ता डॉ. सुनील बहल

स्टेट रिसोर्स पर्सन *(हिंदी और पंजाबी)*

'शब्द' भाषा की स्वतन्त्र इकाई है। शब्दों से ही वाक्य की रचना होती है। किन्तु यदि इन स्वतन्त्र शब्दों को वाक्य में ज्यों के त्यों ही रख दें तो वह वाक्य नहीं कहलाएगा। जैसे- सुशील रोहित लाठी मारी।

उपर्युक्त शब्दों को एक साथ बोलने से यह सार्थक वाक्य नहीं कहलाएगा। सार्थक वाक्य बनाने के लिए इन शब्दों में विभिन्न परसर्ग लगाकर इनके रूप बदलने होंगे अर्थात 'सुशील' शब्द को 'सुशील ने', रोहित शब्द को 'रोहित को', लाठी शब्द को 'लाठी से' बनाना होगा। अत: सार्थक वाक्य होगा।

सुशील ने रोहित को लाठी से मारा।

इस प्रकार वाक्य में प्रयुक्त 'सुशील ने','रोहित को', 'लाठी से' कोई नए शब्द नहीं हैं बल्कि, 'सुशील', 'रोहित ' तथा 'लाठी' से बने वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द रूप या पद हैं। अत: **जब शब्दों को वाक्य में प्रयुक्त करते हैं तो वे पद कहलाते हैं। व्याकरण की दृष्टि उनका पूर्ण परिचय देना ही पद परिचय है।**

पद परिचय में पद के भेद, उपभेद, लिंग वचन, कारक आदि की जानकारी दी जाती है।

पद परिचय में निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया जाना चाहिए।

(1) **संज्ञा –** भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक,भाववाचक) लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ उसका सम्बन्ध (यदि हो तो)।

(2) **सर्वनाम –** भेद (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंध वाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक) पुरुष, लिंग, वचन, कारक क्रिया से उसके संबंध।

(3) **विशेषण –** भेद (गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक) लिंग, वचन और विशेष्य।

(4) **क्रिया** – भेद अकर्मक, सकर्मक, प्रेरणार्थक, संयुक्त आदि, लिंग, वचन, पुरुष, धातु, काल, वाच्य प्रयोग (कर्त्ता व कर्म का संकेत)।

(5) **क्रिया विशेषण** – भेद (कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक) संबंधित क्रिया का निर्देश अर्थात् जिस क्रिया की विशेषता बताई गई हो।

(6) **समुच्चयबोधक** – भेद(समानाधिकरण, व्यधिकरण) जिन शब्दों या वाक्यों को मिला रहा है, उनका उल्लेख।

(7) **संबंधबोधक** – भेद(जिस संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध हो, उनका उल्लेख)

(8) **विस्मयादि बोधक** – भेद अर्थात् कौन सा भाव प्रकट हो रहा है।

पद-परिचय के कुछ उदाहरण देखिए-

1. चार्वी ने मेहनत की और वह दसवीं कक्षा में प्रथम आयी।

चार्वी न - संज्ञा, व्यक्तिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'की' और 'आयी' क्रियाओं की कर्त्ता।

मेहनत - संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'की' क्रिया का कर्म।

की - क्रिया, सकर्मक, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, निश्चयवाचक, कर्तृवाच्य, भूतकाल, कर्तरि प्रयोग।

और - समानाधिकरण योजक, संयोजक, उपवाक्यों को जोड़ रहा है।

वह - सर्वनाम, पुरुषवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'आयी' क्रिया का कर्त्ता।

दसवी - विशेषण, क्रमवाचक, निश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

कक्षा म - संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'आयी' क्रिया का अधिकरण।

प्रथम – विशेषण, क्रमवाचक, निश्चित संख्यावाचक, पुल्लिग, एकवचन, बताए हुए 'स्थान' विशेष्य का विशेषण।

आयी – क्रिया, सकर्मक, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, भूतकाल, निश्चयवाचक, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग।

(2) हम पिछले साल तुम्हें चण्डीगढ़ में मिले थे।

हम – सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्त्ता कारक, 'मिले थे' क्रिया का कर्त्ता।

पिछले – विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिग, एकवचन, मूलावस्था, विशेष्य 'वर्ष' की विशेषता।

साल – संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक 'मिले थे', क्रिया का समयवाचक।

तुम्ह – सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मिले थे', क्रिया का कर्म।

चण्डीगढ – संज्ञा, व्यक्तिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'मिले थे', क्रिया का स्थानवाचक।

मिले थ – क्रिया, सकर्मक, भूतकाल, पूर्णभूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य कर्त्ता (क्रिया का) 'हम'।

पद–परिचय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि शब्द का पद–भेद क्या है क्योंकि भाषा में अनेक शब्द ऐसे होते हैं जो अनेक पदभेदों का काम करते हैं। प्रयोग में वे कभी संज्ञा, सर्वनाम कभी विशेषण तो कभी क्रिया–विशेषण आदि बन कर आते हैं। जैसे–

(1) आप	मध्यमपुरुष वाचक सर्वनाम	आप चलिए।
	निजवाचक सर्वनाम	मैं यह काम आप ही देख लूँगा।
	अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम	प्रसाद जी नाटककार थे। आप उत्कृष्ट कवि भी थे।

(2) एक	सर्वनाम	वहाँ एक आता है,एक जाता है।
	विशेषण	एक दिन वह ज़रूर आएगा।
	क्रियाविशेषण	एक तो पानी गिरा दिया, दूसरे चिल्ला रहे हो।
(3) ऐसा	संज्ञा	ऐसां को मैं ही ठीक कर सकता हूँ।
	सर्वनाम	ऐसा मत बोलो।
	विशेषण	ऐसा आदमी मिलना कठिन है।
	क्रियाविशेषण	वह ऐसा लिखता है कि समझ में नहीं आता।
(4) और	संज्ञा	औरों से मत कहना।
	सर्वनाम	वह और है; तुम और हो।
	विशेषण	और मज़दूर चाहिएं।
	क्रियाविशेषण	गाड़ी और तेज़ चलाओ।
	समुच्चयबोधक	राम और लक्ष्मण वन को गए।
(5) कारण	संज्ञा	जाने का कारण नहीं पता।
	संबंध बोधक	मैं बीमारी के कारण वहाँ नहीं जा सका।
	समुच्चय बोधक	वह गरीब है इस कारण फीस नहीं दे सकता।
(6) कछ	संज्ञा	कुछ के लिए तो ठीक रहेगा।
	सर्वनाम	बाज़ार से कुछ ले आओ।
	विशेषण (संख्यावाचक)	कुछ लड़के बाहर खड़े हैं।
	विशेषण (परिमाणवाचक)	कुछ चावल दे दो।
	क्रियाविशेषण	वह कुछ बोलता ही नहीं।
	समुच्चयबोधक	कुछ तुम करो, कुछ हम करें।
(7) कोई	सर्वनाम	कोई आ रहा है।
	विशेषण	कोई किताब दे दो।
	क्रियाविशेषण	वहाँ कोई (लगभग) पाँच-छः लोग थे।
(8) कौन	सर्वनाम	कौन गया था?
	विशेषण	कौन व्यक्ति चिल्ला रहा है?
	क्रियाविशेषण	परीक्षा में प्रथम आना कौन कठिन है।
(10) चाहे	क्रिया	तुम्हारा मन चाहे तो आ जाना।

	क्रियाविशेषण	आप चाहे मुझे जितना मारो, मैं गलत काम नही करूँगा।
	समुच्चयबोधक	चाहे चाय पीओ, चाहे कॉफी।
(11) जैसा	सर्वनाम	जैसा करोगो, वैसा भरोगो।
	विशेषण	जैसा देश, वैसा भेष।
	क्रियाविशेषण	मैं जैसा चाहता हूँ,वैसा ही होगा।
	समुच्चयबोधक	ईश्वर तुम्हारे जैसा बेटा सबको दे।
(12) जो	सर्वनाम	जो सोता है वो खोता है।
	विशेषण	जो काम करो,मन लगाकर करो।
	क्रियाविशेषण	जो जेब देखी तो खाली थी।
	समुच्चयबोधक	जो तुम आ जाते तो काम हो जाता।
(13)बहुत	संज्ञा	इस विषय में बहुत चर्चा हो चुकी है।
	सर्वनाम	बहुत हो चुका, अब रहने भी दो।
	विशेषण	वहाँ बहुत लोग इकट्ठा थे।
	क्रियाविशेषण	वह बहुत बोलता है।
(14)भला	संज्ञा	सब का भला हो।
	विशेषण	वह भला इन्सान है।
	क्रियाविशेषण	तुम भले आए।
(15) यह	सर्वनाम	यह मेरा स्कूल है।
	विशेषण	यह स्कूल मेरा है।

डॉ.सुनील बहल
स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी और पंजाबी)